JESUS REDEEMS MINISTRIES

युवा जीवन

सहायक!

प्राक्कथन

मेरे प्यारे युवाओं को प्यार भरा अविवादन!

आज का समाज दुनिया के कोने-कोने में निर्भीकता से यात्रा करने के लिए अपने स्मार्टफोन पर निर्भर है। बहुत से लोग ऐसा भी सोचते हैं कि गूगल मैप का होना न केवल एक छोटे से गाँव की यात्रा करने के लिए बल्कि पैदल कुवैत तक जाने के लिए भी पर्याप्त है। लेकिन कई लोगों ने ऐसे आविष्कारों तथा मानव निर्मित उपकरणों की मार्गभ्रष्ट खोज में अपनी जान गंवाई है। इसके अलावा, कई लोग इन आविष्कारों के गुलाम बन गए हैं।

कई लोगों के लिए, उनका मोबाइल फोन उनका आदर्श साथी व एक दोस्त बन गया है जो उन्हें सलाह देता है। लेकिन वह सिद्ध सहायक, सबसे अच्छा दोस्त, अच्छा मार्गदर्शक जिसके बारे में यीशु ने बात की, वह हमारा सान्त्वनादाता, पवित्र आत्मा था, जो प्रतिदिन हमारे साथ रहता है। लेकिन आज का युवा समाज इस सान्त्वनादाता पर निर्भर नहीं है और बल्कि खुद को आराम देने के लिए कई गैजेट्स व सांसारिक चीज़ों का उपयोग करता है, और उन पर निर्भर रहता है जिससे वह उस सहायक के सच्चे प्रेम एवं दृढ़ सहायता को भूल जाते हैं। कुछ उस सहायक से नफरत भी करते हैं। और आज की संस्कृति को देखते हुए, कुछ किशोर रोबोट के साथ बात करके और उन्हें अपने साथी के रूप में रखते हुए एक आभासी दुनिया में रहकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं।

आज का युवा जिस समस्या का सामना कर रहा है यह है कि वह पवित्र जीवन जीने में असमर्थ है। यदि हमारे जीवन में हमारा सहायक है तो वह पाप की निंदा करेगा, धार्मिकता सिखाएगा और आने वाले न्याय के दिन के बारे में हमें चेतावनी देगा। हम अपने दोस्तों, सबसे अच्छे दोस्तों और सही साथी के रूप में कई लोगों के नाम का हवाला देते हैं। लेकिन वे हमें हमारी गलतियाँ नहीं बताते ताकि हमारी भावनाओं को ठेस न पहुँचे। लेकिन हमारा सहायक, पवित्र आत्मा न केवल हमें चेतावनी देता है बल्कि हमारे जीवन में बिना फिसले एक संतुलित मार्ग पर प्रतिदिन चलने के लिए एक मजबूत नींव भी रखता है क्योंकि वह हमारी बहुत परवाह करता और हमसे प्यार करता है।

मेरे प्यारे युवाओं!

बेदारी के इन अंतिम दिनों में यदि आपके पास पवित्र आत्मा के साथ आपकी संगति, जुनून, अटल संकल्प तथा गहरा प्रेम है, तो आप वह शक्तिशाली पात्र बन सकते हैं जिसका वह उपयोग करेगा।

वह आपको मुद्रिका की तरह इस्तेमाल करेगा।

यदि आप जैसा प्रत्येक युवा अपने जीवन में पवित्र आत्मा को अपने सहायक के रूप में स्वीकार करता है, तो हम बेदारी की आग तथा परमेश्वर के प्रेम को पूरी दुनिया में आसानी से फैला सकते हैं।

मसीह के कार्य में,

अविनाश

सहायक!

अपने जीवनकाल में, अपनी युवावस्था के दिनों में, हम सबसे अधिक फलदार बने रहते हैं, और अपने सपनों व जुनून को हासिल करने के लिए काफी निर्भीक होते हैं। हर किसी के जवानी के दिन हमेशा बड़े जोश से भरे होते हैं। हम उकाबों की तरह ऊँचे उड़ते हुए महसूस करते हैं, और हम तेजी से काम करना पसंद करते हैं। ये चीजें एक युवा की शक्ति और क्षमता को दर्शाती हैं। लेकिन विडंबना यह है कि जिन कामों को युवाओं द्वारा उत्साहपूर्वक शुरू किया जा रहा है, वे अक्सर खत्म नहीं होते। इसका मुख्य कारण निराशा है। एक साधारण सा प्रश्न जो आमतौर पर एक युवा के दिल में उठता है, वह यह है, "मुझे आगे क्या करना चाहिए?" आस-पास की परिस्थितियों को देखकर, और असफलताओं का सामना करते हुए, युवा अक्सर निराश हो जाते हैं और हार मान लेते हैं। यदि आप भी अपने भविष्य के बारे में विफलता, निराशा या भय के परिणामस्वरूप निराशा के दौर से गुजर रहे हैं, तो आपको बल देने के लिए, परमेश्वर पिता ने एक सहायक भेजा है। "वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ देता है" (यशायाह 40:29)।

यह सहायक कौन है?

पवित्र आत्मा वह सहायक है जो यीशु मसीह के द्वारा हमारे साथ रहने के लिए पिता परमेश्वर की ओर से आया है। एक बच्चा पिता के साथ रहना पसंद कर सकता है, लेकिन जब उसे कोई कमजोरी होगी तो वह हमेशा माँ को ढूँढेगा। मां की ममतामयी गर्मजोशी व स्पर्श से बच्चे को सुकून मिलेगा। प्रभु स्वयं को अनेक स्थानों पर माता के रूप में प्रकट करते हैं। दाऊद के पिता यिशै ने दाऊद को छोड़कर अपने सातों पुत्रों को इस्राएल की सेना में शामिल होने के लिए सुशिक्षित किया। परन्तु उस ने दाऊद को एक ऐसे चरवाहे के काम में भेजा, जिसे सब तुच्छ जानते थे। इतना ही नहीं, दाऊद से उसके पिता और भाई भी घृणा करते थे। दाऊद का परिवार उससे इस हद तक नफरत करता था कि उस शमूएल नबी का उसके घर जाना भी उससे छुपाया गया था, जो दान से लेकर बेर्शेबा तक प्रसिद्ध था। हो सकता है कि दाऊद की मां भी उसे लावारिस छोड़ गई हो या दाऊद ने सोचा होगा कि यदि उसकी मां होती तो यह स्थिति न होती! परन्तु जिस यहोवा पर उसने भरोसा किया, उन्होंने न तो उसे छोड़ा और न उससे बैर रखा। यहोवा ने निश्चय दाऊद को उस समय शान्ति दी होगी, जब वह अपनी भेड़ों को जंगल में अकेले चरा रहा था। इसलिए दाऊद अपने अनुभव के बारे में बताता है, "मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा" (भजन संहिता 27:10)। यहाँ तक कि आप, जो इसे पढ़ रहे हैं, हो सकता है कि अपने भाई-बहनों, आपके अपने रिश्तेदारों द्वारा, दाऊद की तरह तिरस्कृत हों, और आपके पास सांत्वना देने या प्रोत्साहित करने वाला कोई न हो, और आपका मन शान्ति के वचनों के लिए तरस रहा हो। प्रभु यीशु मसीह अब आपकी ओर देखते हैं और कहते हैं, "जिस प्रकार माता अपने बच्चे को शान्ति देती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शान्ति दूँगा" (यशायाह 66:13)।

कभी-कभी, एक माँ भी, जिसने 10 महीने तक बच्चे को अपने गर्भ में रख कर जन्म दिया है, अपने बच्चे को भूल सकती है। लेकिन प्रभु हमें कभी नहीं भूलते। यहोवा यों कहते हैं, ""क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हाँ, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता" (यशायाह 49:15)। जब यूसुफ अपने दर्शन की ओर दौड़ रहा था तब उसके जीवन में अनेक निराशाएँ, घृणा, दुःख व अपमान थे। उसे ऐसी स्थिति में धकेल दिया गया जहाँ यूसुफ से लाभ पाए लोग भी उसकी मदद नहीं कर सके। यूसुफ इस सब से कैसे उबर सकता था? आप सोच रहे होंगे, "क्या वह निराश नहीं होगा?" निराशा आ गई होगी। परन्तु यहोवा ने, जो यूसुफ के साथ थे, उसे शान्ति दी। इस कारण उसने अपने जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयों का सामना किया हो, वह उन सब से परे अपने दर्शन को पाने में सक्षम था।

वे चेले जो दुनिया भर में सुसमाचार को ले जाने वाले थे, यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद निराश हो गए थे। निराश चेलों को बनाने व प्रोत्साहित करने के लिए, 40 दिनों के लिए यीशु उनके सामने प्रकट हुए और उन्हें उनके दर्शन के राह पर बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया। "उसने दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा" (प्रेरितों के काम 1:3)।

मेरे प्यारे युवाओं! आज की दुनिया में बहुत से युवा लोग अपने जीवन आने वाली विफलता व असफलताओं के कारण बिना किसी प्रोत्साहित या निर्माण करने वाले के, हताश व दुखी हैं, लेकिन आप उस तरह के नहीं हैं, जैसा कि, यूहन्ना 14:16,17 बताता है, "मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे, अर्थात् सत्य का आत्मा", जब भी आप निराश हों या खुद को दबा हुआ महसूस करें, तो आपका निर्माण करने व आपको एक मां के जैसे शान्ति देने, सहायक पवित्र आत्मा आपको भीतर से मजबूत करेगा और आपको दिलासा देगा। किसी भी परिस्थिति में, निराश न हों और पवित्र आत्मा के साथ अपनी दर्शन की ओर दौड़ें। आप विजय पाएंगे!

पूरी हुई महत्वाकांक्षा

बहन जिनी एक मसीही परिवार में पैदा हुई, उसकी परवरिश मसीह की शिक्षा में हुई, लेकिन एक युवा अवस्था में आने पर वह मसीह से दूर चली गई। लेकिन, उसने परमेश्वर के साथ अपने संबंध को नया किया और उनकी उपस्थिति में लौट आई। आइये इस महीने हम उसकी ग्वाही सुने।

हैलो जिनी, हमें अपने और अपने परिवार के बारे में बताएं।

नमस्कार, बहन। मेरा नाम जिनी है, मेरा जन्म व पालन-पोषण कन्याकुमारी जिले के नागरकोइल में हुआ था। मैं अपने पिता जॉन निशान व माता सेल्वा अमुधा की सबसे बड़ी बेटी हूं। मेरी एक छोटी बहन है जो अभी कॉलेज में पढ़ रही है। मेरे पिता एक मसीही हैं, जबकि मेरी माँ ने एक अविश्वासी परिवार से आ कर मसीह को स्वीकार किया। उन दोनों ने सुनिश्चित किया कि मेरी एक मसीही परवरिश हो। मैं बचपन से ही समय पर प्रार्थना किया करती थी और नियमित रूप से चर्च जाती थी। मेरी दादी हमारे साथ रहती हैं। यह मेरा सुंदर परिवार है।

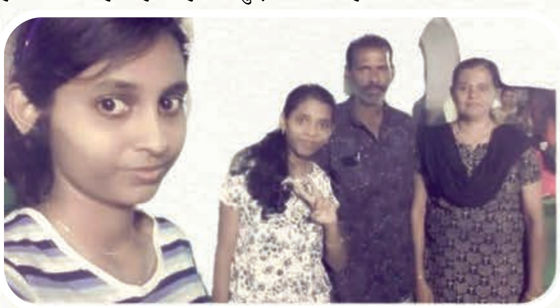

आपने अपने सुंदर परिवार के बारे में साझा किया है। आपका स्कूल व कॉलेज का जीवन कैसा था?

मैं स्कूल में अव्वल हुआ करती थी। मैं अच्छी तरह से पढ़ना चाहती थी और एक आई.ए.एस या उच्च स्तर की एच.आर. बनना चाहती थी। मुझे डांस में भी उतनी ही दिलचस्पी थी। मैंने 10वीं में 489/500 और 12वीं में 1061/1100 अंक प्राप्त किए। आवश्यक प्रेम व देखभाल देते हुए मेरे माता-पिता मेरे बहुत सहायक रहे और इसने मुझे मेरी पढ़ाई में उपलब्धि दी।

उत्तम! आपने अच्छी पढ़ाई की है.... हमें अपने उद्धार के अनुभव के बारे में बताएं....

जैसा कि मैंने कहा कि मेरी मां एक अविश्वासी परिवार से थीं। मेरे माता-पिता की शादी के बाद, वे नियमित रूप से चर्च जाया करते थे। जब मैं तीसरी कक्षा में थी तो मेरी माँ ने एक दुष्ट आत्मा के कारण बहुत दु:ख सहा, लेकिन, हमारी प्रार्थना के कारण परमेश्वर ने उसे पूर्ण छुटकारा दिया। इस चमत्कार को होता देखकर, इसने मुझे यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने और उनसे अधिक प्रेम करने के लिए प्रेरित किया। उस समय से, मैंने सभी को बताना शुरू किया कि यीशु ही एकमात्र जीवित परमेश्वर हैं। मसीह के लिए मेरा प्यार हर दिन बढ़ता गया। लेकिन तब मेरा अभिषेक नहीं हुआ था, मैं बस बड़ी उत्सुकता से प्रार्थना करती रही।

आपने अच्छे अंक प्राप्त किए... आपका कॉलेज जीवन कैसा था? क्या आप मसीह में बढ़ने के योग्य थीं?

मैंने अपना स्कूल पूरा किया और कॉलेज की पढ़ाई करने लगी। उसके बाद भी कुछ समय तक मेरी प्रार्थना का जीवन स्थिर रहा। मैं अपनी प्रार्थनाओं और बाइबल-पठन में नियमित थी। लेकिन बहुत जल्द मैंने अपनी मर्जी से जीना शुरू कर दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक आज़ाद पक्षी हूं। लेकिन मेरे प्रार्थना जीवन को नुकसान हुआ और एक पाप दूसरे का कारण बनता गया। मैंने कई बुरी आदतों को जगह दी। मैंने बी.टी.एस, मोन्स्टा एक्स, ब्लैकपिंक और एन.सी.टी. जैसी के-पॉप संगीत मंडलियों का अनुसरण करना शुरू कर दिया और दिन-रात उनके गीतों का

सुनती रही। मैंने दिन भर कोरियाई श्रृंखला को भी सुनना शुरु कर दिया। इन सब के कारण, मैंने 4 वर्षों तक अपने सुबह का नाश्ता भी छोड़ दिया। एक बार जब में कॉलेज से लौटी, तो मैं अपना फोन उठाकर यह वीडिओ देखने के लिए बैठ गई।

इसके अलावा मुझे सोशल मीडिया के इंस्टाग्राम, स्नैपचैट और व्हाट्सएप की लत थी। जैसे ही मैं अपना फोन अनलॉक करती, मेरे हाथ इंस्टाग्राम देखने लग जाते थे। मेरी लत का ऐसा स्तर था। मैंने के-पॉप समूहों के कपड़े पहनना और उनकी चीज़ें खरीदना शुरू कर दिया। मेरे प्रार्थना जीवन ने दूसरी जगह ले ली और मेरा परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध नहीं था।

अनेकों पापों की आदी बन कर परमेश्वर के साथ अपने संबंध में बढ़ने के अयोग्य रहते हुए आपने परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते का नवीनीकरण कैसे किया?

मुझे 2016 से स्मार्टफोन की लत लग गई थी। पूर्वस्नातक पूरी करने के बाद, मैं एच.आर. बनने के लिए आगे की पढ़ाई करना चाहती थी। इसलिए मैंने चेन्नई में स्नातकोत्तर कोर्स के लिए आवेदन किया। जब मैं वहां पढ़ रही थी, तब पहला लॉकडाउन घोषित हो गया और मैं अपने घर वापस आ गई। जब मैं अपने घर पहुंची तो मैंने पाया कि मेरा पूरा परिवार तमिल धारावाहिकों का आदी हो गया है। मेरे पास भी इसे छोड़ने का विकल्प नहीं था, इसलिए मैं भी उनके साथ शामिल हो गई। ऐसे ही समय में हमें टीवी पर जेबीक्कलम वंगा कार्यक्रम देखने को मिला। परमेश्वर ने कार्यक्रम के माध्यम से हमसे बात की और हमें अपने प्रार्थना जीवन को नवीनीकृत करने के लिए कहा। इसलिए, हमने आज्ञा मानी और अपनी पारिवारिक प्रार्थना को फिर से शुरू किया। मैंने अपनी दैनिक व्यक्तिगत प्रार्थना भी शुरू की। धीरे-धीरे परमेश्वर ने मुझे सभी पापों और व्यसनों से मुक्ति दी। जनवरी 2021 में मुझे रिवाइवल इग्नाइटर्स कैंप के बारे में पता चला और मैंने उसमें भाग लिया। उसके बाद मेरी जिंदगी पूरी तरह बदल गई। मैंने अपने सभी पापों को यीशु के सामने स्वीकार किया और आंसुओं के साथ प्रार्थना की। परमेश्वर ने मुझे सभी पापों से मुक्ति दी, मेरा अभिषेक किया और मुझे अपनी मुक्ति सेना में ले लिया।

पहले मैं दुष्ट आत्माओं से डरती थी, लेकिन अब परमेश्वर ने मुझे युद्ध की प्रार्थना के माध्यम से उन दुष्ट आत्माओं के कामों और मार्गों को बांधने के लिए बदल दिया है। उन्होंने मुझे प्रतिदिन 2-3 घंटे अपने राष्ट्र के लिए दरार के अंतर में खड़े रह कर प्रार्थना करने का मन दिया है। उस कैंप में भाग लेने के पश्चात मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गया।

उत्तम! आपने यीशु के साथ अपने रिश्ते को नया किया... क्या आपका एक एच.आर. बनने का सपना पूरा हुआ?

3-दिन के कैंप में, उन्होंने हमें एक दूसरे की जरूरतों के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा। मैं अपने प्रार्थना सहयोगियों से मेरी नौकरी के लिए प्रार्थना करने के लिए कह रही थी। कैंप के थोड़े ही समय के बाद मुझे एक इंटरव्यू कॉल आया और मुझे नौकरी मिल गई। मुझे वहां केवल मामूली वेतन मिला। जब मैं वहाँ काम कर रही थी, मैं यीशु से उच्च वेतन की नौकरी के लिए प्रार्थना कर रही थी और कोशिश करती रही। बहुत जल्द, मुझे मेरी उम्मीदों से परे एक अच्छी वेतन वाली कंपनी में नौकरी मिल गई।

आपका एच.आर. बनने का सपना पूरा हो गया... परमेश्वर के साथ अब आपका रिश्ता कैसा है?

मैं इससे बहुत खुश हूं। पहले मैं हर समय अपने फोन के साथ खिलवाड़ करती थी, लेकिन अब मेरे प्रार्थना जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया है। परमेश्वर मुझसे बात करते हैं और मैं हर दिन उनसे बात करती हूं। जब मैं प्रार्थना में होती हूं तो मुश्किल से मुझे घंटों का पता चलता है। उनके साथ बात करना बहुत ही प्यारा अनुभव रहा है। सेवकाई के एक भाग के रूप में अब मैं पुस्तकें बाँट रही हूँ और प्रार्थना चाल पर जा रही हूँ। मैं परमेश्वर के लिए और अधिक करने के लिए प्रार्थना कर रही हूँ। मैं उस परमेश्वर के प्रति सच्ची रहूंगी जिसने मुझे मेरे पापी व्यसनों से छुड़ाया है।

आप युवाओं को क्या बताना चाहती हैं?

परमेश्वर से ज्यादा किसी चीज को प्यार करना पाप है। पाप का बोध होना और फिर भी उसे करना एक बड़ा पाप है। यदि आप बदले हुए मन से परमेश्वर के सामने पश्चाताप करते हैं, तो वह आपके सभी पापों को क्षमा कर सकते हैं और आपको स्वतंत्रता दे सकते हैं। आज अपना हृदय परमेश्वर को दे दें!

प्रिय युवाओं! परमेश्वर ने बहन जिनी को स्मार्टफोन की लत से मुक्ति दिलाई और उसे एक प्रार्थना योद्धा के रूप में प्रतिदिन 3 घंटे प्रार्थना करने वाली बनाया हैं। यदि आप किसी भी पाप के आदी हैं, तो पश्चाताप करें और यीशु के पास लौटें। वह आपको भी एक प्रार्थना योद्धा के रूप में उठाएंगे! क्या आप तैयार हैं?

विवाह

Heart Beat

मैं एक अस्पताल में ऑपरेशन थियेटर में एक महत्वपूर्ण विभाग में कार्यरत हूं। मैं मसीह को जानती हूं और मैं बच्चों की सेवकाई में एक चर्च में सेवा करती हूं। मेरे कार्यस्थल पर एक अविश्वासी के साथ मेरी दोस्ती हो गई। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, हम दोस्ताना ढंग से बात करने लगे। अब घर में मेरी शादी की बात चल रही है लेकिन मेरा मन सिर्फ उसी के बारे में सोच रहा है। पहले तो जब मैंने अपने माता-पिता को उसके बारे में बताया, तो उन्होंने विरोध किया लेकिन बाद में उन्होंने कहा कि वे मेरी मर्जी अनुसार ही करेंगे। मैंने उसे यीशु के बारे में बताया, और वह हमारे विश्वास के अनुसार मुझसे शादी करने के लिए तैयार हो गया। वह चर्च आने लगा और अब बपतिस्मा लेने के लिए भी तैयार है। इस स्थिति में, मेरी सहयोगी ने मुझसे एक प्रश्न पूछा जिसने मुझे परेशान किया। एंजल, क्या यीशु आपकी शादी के लिए सहमत हैं? क्या तुम्हें पता चला कि आपके विवाह में परमेश्वर की क्या इच्छा है? क्या तुम साहसपूर्वक स्वीकार कर सकती हो कि यह विवाह प्रभु की ओर से है? मेरी सहेली ने मुझसे जो प्रश्न पूछे थे, मैं उनका उत्तर नहीं दे पाई। मैं बहुत उलझी हुई हूं। मुझे गलत फैसला नहीं लेना चाहिए। कृप्या मेरी सहायता करें।

- एंजल, पांडिचेरी

प्रिय बहन एंजेल, मैं आपकी चिंता व उलझन को समझ सकता हूं। मैं परमेश्वर का धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने आपको अच्छी सहेली दी है। एंजल, आप इन तीन सवालों का जवाब क्यों नहीं दे सकीं? आप एक प्रार्थना करने वाली लड़की हैं और मुझे यकीन है कि आपने प्रार्थना की होगी। फिर आप क्यों बेवजह उलझन में हैं? जब आपने इसके बारे में प्रार्थना की है तो आपको क्यों लगता है कि आपको कोई गलत निर्णय नहीं लेना चाहिए? एंजल, यदि आपकी परमेश्वर के साथ अच्छी संगति होती, तो आप तुरंत अपनी सहेली को जवाब देती और उसका मुंह बंद कर देती।

आपके मित्र का पहला प्रश्न था, क्या यीशु इस विवाह के लिए सहमत थे?

चूंकि आप प्रार्थना करने वाली लड़की हैं, तो आपने अपने विवाह के लिए भी प्रार्थना की होगी। यीशु ने आप से क्या कहा? यदि उन्होंने 'हाँ' कहा होता, तो कोई बात नहीं। शायद वह 'नहीं' कह सकते थे या 'प्रतीक्षा' करने का संकेत दे सकते थे। लेकिन यीशु कभी ऐसा कुछ

नहीं कहेंगे जो परमेश्वर के वचन के विपरीत हो। जब उन्होंने अपने वचन में कह दिया कि एक अविश्वासी के साथ जुए में न जुतो, तो कोई फर्क नहीं पड़ता चाहे हम रोएँ और प्रार्थना करें या उपवास करके उनका हृदय पिघला दें, वह कभी भी अपने वचन के विरुद्ध कार्य नहीं करेंगे।

इसके अलावा, आप एक प्रार्थना करने वाली लड़की हैं, आप सेवकाई करती हैं और इसलिए मुझे यकीन है कि आपने अपने होने वाले पति के लिए प्रार्थना की होगी। आपने प्रार्थना करने वाले पति के लिए प्रार्थना की होगी, जो आपके साथ सेवकाई करे, जो आपको सेवकाई करने के लिए प्रोत्साहित करे, एक परिवार के रूप में आप एक गवाह हों और परमेश्वर के लिए आत्माओं को जीतें और ऐसी कई प्रार्थनाएँ। यदि आपने ऐसी कोई अपेक्षा या प्रार्थना अनुरोध नहीं किया तो आप प्रार्थना कैसे कर सकते हो और किसी प्रस्ताव का उत्तर कैसे दे सकते हो?

एंजल, केवल आपकी कोई अपेक्षाएं होने पर ही आप उस प्रस्ताव का विश्लेषण कर सकते हैं जो आपको प्राप्त होता है। यदि सही अपेक्षाएं न हों या यदि आप अपने होने वाले पति के लिए सही प्रार्थना नहीं करती हैं, तो किसी भी प्रस्ताव को 'हां' कहने की संभावना रहती है। गलत निर्णय लेने का भी खतरा हो सकता है।

दूसरा सवाल, क्या आपको पता चला आपके विवाह में परमेश्वर की क्या इच्छा है?

आपने बहुत से लोगों को यह कहते सुना होगा कि परमेश्वर ने इस व्यक्ति को मेरे जीवन में आने दिया, अन्यथा मैं उससे नहीं मिलती या उससे सुसमाचार साझा करने का अवसर न मिलता जो कि परमेश्वर की इच्छा है।

ठीक है, जैसा कि आपने कहा, आपने यीशु को उससे मिलवाया है, और यह अच्छा है। लेकिन क्या आप कह सकते हैं कि उसका आत्मिक विकास कैसा है? हो सकता है उसने यीशु को जाना हो, वह प्रेम के कारण आपके लिए चर्च आया हो, लेकिन क्या उसके पास एक ईश्वरीय परिवार बनाने के लिए आत्मिक विकास है?

आज की दुनिया में जहां पति-पत्नी प्रार्थना करते हैं, उन्हें हर दिन की चुनौतियों का सामना करना बहुत मुश्किल लगता है। क्या आप उस व्यक्ति के आत्मिक विकास के बारे में जानती हैं जिससे आप प्यार करती हैं? आप बच्चों की सेवकाई के साथ-साथ प्रार्थना भी कर सकती हैं लेकिन उस

व्यक्ति का क्या? उसके अनुसार वह अपने आत्मिक जीवन में एक बच्चे की समान है जबकि आप आत्मिक जीवन में अधिक परिपक्व हैं जैसे प्रार्थना करना, अभिषेक पाना, सेवकाई करना तथा आत्माओं के लिए बोझ होना। यदि इतना ज्यादा आत्मिक मतभेद हैं, तो एक साथ एक मसीही परिवार का निर्माण कैसे हो सकता है? क्या आपको लगता है कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि आपको सहायक के रूप में एक ऐसा व्यक्ति दिया जाए जो आत्मिक जीवन में एक बच्चे की तरह है?

यदि आप फिर भी हाँ कहती हैं, तो आपको अपने आत्मिक जीवन में बहुत सी चीजों का त्याग करना होगा। उदाहरण के लिए, खेत में जुताई करते समय वे एक तरफ बैल और दूसरी तरफ बछड़ा नहीं बांधते, क्योंकि इससे जुताई में मदद नहीं मिलेगी। इसलिए आप सोचिए कि यह शादी परमेश्वर की मर्जी होगी या नहीं।

तीसरा प्रश्न, क्या आप साहसपूर्वक स्वीकार कर सकती हैं कि यह विवाह प्रभु की ओर से है?

एंजल, जिस व्यक्ति से आप शादी करना चाहती हैं, वह पहले एक दोस्त था। इसलिए, उसने कई मायनों में आपकी मदद की होगी। कठिन परिस्थितियों में, जब मदद करने वाला कोई न हो, तो आपके परिवार के लिए या आपके लिए वह एक सहारा हुआ होगा। यदि नहीं तो आपकी दोस्ती प्यार के रूप में नहीं बदलेगी।

इसलिए, उसके जीवन में उससे मिलना, उसके साथ सुसमाचार बाँटना, परमेश्वर के कार्य जैसा प्रतीत होगा। दूसरी ओर, जब आप ज़रूरत में थी, तो परमेश्वर उसे आपके जीवन में एक सहायक व्यक्ति के रूप में लेकर आए होंगे, जिसके आधार पर आपने उसके साथ परमेश्वर का प्रेम साझा किया होगा। जैसे हम बाइबल में देखते हैं, हमारी सहायता करने के लिए, परमेश्वर स्वर्गदूतों को हमारी सेवा करने के लिए भेजते हैं। हमें यह जानने की जरूरत है कि वे हमारी मदद करने के लिए हैं न कि उन्हें सहायक के रूप में चुनने के लिए। परमेश्वर हमारे जीवन में बहुत से लोगों को कुछ क्षणों के लिए या कुछ समय के लिए, हमारी सहायता करने या हमें उठाने या हमें किसी आकार में ढालने के लिए आने देते हैं। लेकिन हम यह तय नहीं कर सकते कि जिसने मदद की क्या वह जीवन भर के लिए सही साथी होगा।

इसलिए, यदि आप अपने मित्र द्वारा पूछे गए तीन प्रश्नों के बारे में गहराई से सोचती हैं, तो आप स्पष्ट निर्णय लेने में सक्षम होंगी।

✦ शायद यदि आपको लगता हो कि आपको उससे शादी करनी है, कि उसे छोड़ना या उसे भूलना मुश्किल है, तो शादी के बाद आपको इसकी कड़वी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

✦ अगर आपको लगता है कि आप अच्छी तरह से समझ चुकी हैं और आप केवल उससे शादी नहीं कर रही हैं, बल्कि यह भी महसूस कर रही हैं कि उसके परिवार की बहू बनकर आपको किन व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, तो सही निर्णय लेने का प्रयास करें।

✦ एंजल! आप अपने जीवन में कोई भी निर्णय बदल सकती हैं। लेकिन यदि आप अपनी शादी में सही निर्णय नहीं लेती हैं, तो यह आपको जीवन भर के लिए रुला देगा या भुगतना पड़ेगा। प्रार्थना करें और फिर निर्णय लें।

परमेश्वर जो विजय देते हैं

"मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा; क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो, उनको फिर कभी न देखोगे। यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो" (निर्गमन 14:13,14) - आपके दैनिक संघर्षों के बीच, आपके लिए प्रभु की प्रतिज्ञा यह है कि 'परमेश्वर आपके लिए लड़ेगा। आपको चुपचाप रहने की आवश्यकता है।' आज आप जिन समस्याओं, चुनौतियों, भय, चिंता, बीमारियों और संघर्षों का सामना कर रहे हैं, उनका आप अनुभव नहीं करेंगे।

इस्राएल के लोग जिन्हें परमेश्वर ने चुना है, वे मिस्र देश में 430 वर्ष तक बंधुआई में रहे। जो लोग यूसुफ के समय में मिस्र में बस गए थे, वे संख्या में बढ़े और एक विशाल समूह बन गए। मिस्रियों ने उनके साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया और उनसे बहुत कठिन परिश्रम किया। इस्राएलियों ने इन लोगों के हाथ से छुटकारे के लिए परमेश्वर की दोहाई दी। परमेश्वर ने उनकी पुकार को सुना और मूसा को उन्हें गुलामी के चंगुल से छुड़ाने के लिए भेजा। साथ ही, परमेश्वर ने अपने शक्तिशाली चमत्कार से उन्हें लाल सागर पार करने में मदद की। जब उन्होंने समुद्र के पास डेरे डाले, तो उन लोगों को राहत मिली कि वे गुलामी से मुक्त हो चुके हैं और अंत में खतरों को पार कर चुके हैं। लेकिन उनकी राहत अल्पकालिक थी। उन्होंने अचानक रथों और सेना की आवाज सुनी। जब उन्होंने पीछे देखा, उन्हें फिरौन के सब घोड़े और रथ, सवार और सिपाही इस्राएलियों का पीछा करते दिखे।

उसने छः सौ अच्छे से अच्छे रथ वरन् मिस्र के सब रथ लिए और उन सभों पर सरदार बैठाए। (निर्गमन 14:7)

सभी लोग हमेशा मिस्र की सेना से डरते थे। इस्राएली जो 430 वर्षों से गुलाम थे, उन्हें कभी भी युद्ध का कोई अनुभव नहीं था, वे बहुत भोले थे तथा तलवार का प्रयोग करना और शत्रुओं से लड़ना भी नहीं जानते थे। इस समय, उन्होंने फिरौन को रथों और घोड़ों की अपनी महान सेना के साथ आते देखा।

जब फ़िरौन निकट आया, तब इस्राएलियों ने आँखें उठाकर क्या देखा कि मिस्री हमारा पीछा किए चले आ रहे हैं; और इस्राएली अत्यन्त डर गए, और चिल्लाकर यहोवा की दोहाई दी। (निर्गमन 14:10)

जब फिरौन की यह सेना उनके निकट आई, तो पहिले वो डर गए। भले ही वे डरते थे, उन्होंने एक अच्छा काम जरूर किया – 'इस्राएली अत्यन्त डर गए, और चिल्लाकर यहोवा की दोहाई दी' (निर्गमन 14:10)। हाँ, जब भी संकट की परिस्थितियाँ हों, हमें परमेश्वर की दोहाई देनी चाहिए। वह एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो हमारी मदद कर सकते हैं और हमारा उद्धार कर सकते हैं। यह वही थे जिन्होंने उन्हें मिस्र की गुलामी से छुड़ाया था। यदि हम परमेश्वर की ओर देखें, तो वह हमें बचाएंगे, हमारी रक्षा करेंगे और हमारे सभी मार्गों में हमें विजय प्रदान करेंगे। निश्चय ही, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि जो उन्हें पुकारेंगे, उन्हें वह छुड़ाएंगे।

इस्राएली लोगों ने यहोवा की दृष्टि में एक और बुरा काम किया, वे मूसा से कहने

लगे, "क्या मिस्र में कब्रें न थीं जो तू हम को वहाँ से मरने के लिये जंगल में ले आया है? तू ने हम से यह क्या किया कि हम को मिस्र से निकाल लाया? क्या हम तुझ से मिस्र में यही बात न कहते रहे कि हमें रहने दे कि हम मिस्रियों की सेवा करें? हमारे लिये जंगल में मरने की अपेक्षा मिस्रियों की सेवा करना अच्छा था।" (निर्गमन 14:11,12)।

कुड़कुड़ाना वह पाप था जिसने इस्राएलियों के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध को भड़काया। परमेश्वर ने उनके विरोध में बड़े क्रोध बात की और उन्हें 'हठीले' और 'कुड़कुड़ाने वाले' करार दिया। कुड़कुड़ाने से परमेश्वर का अपमान होता है और वह निरुत्साह हो जाते हैं। इस्राएलियों ने कुड़कुड़ाकर यह कहते हुआ पूछा, 'हम मिस्र में रह सकते थे, तू हमें इस जंगल में क्यों लाया?' लेकिन इन परिस्थितियों के बीच, उनके अगुआ एवं परमेश्वर के दास, मूसा ने विश्वास में उन्हें यह कहते हुए प्रोत्साहित किया, 'डरो मत'। इस्राएली बहुत दयनीय जीवन शैली में जी रहे थे। उनके साथ गुलाम जैसा व्यवहार किया जाता था, छोटी-छोटी गलतियों के लिए उन्हें पीटा जाता था और अधिक परिश्रम के बोझ से उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। शायद, इसलिए वे स्वाभाविक रूप से हर स्थिति से डरते हैं। शैतान का सबसे बड़ा विचार हमेशा लोगों के दिलों में डर बैठाना है और ये वह मुख्य हथियार है जिसे शैतान परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध इस्तेमाल करना चाहता है। भले ही स्थिति बहुत धमक-वाली और भयावह लगती हो, परमेश्वर हमें याद दिलाते हैं कि हमें डरना नहीं चाहिए।

यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो" (निर्गमन 14:14)।

यद्यपि ये लोग लड़ने में कुशल नहीं थे, फिर भी अगली पीढ़ी योद्धाओं के रूप में उभरी। जब तक वे रपीदीम पहुंचे, तब तक वे बहुत अच्छी तरह प्रशिक्षित थे और परमेश्वर ने यहोशू के माध्यम से उन्हें युद्ध करने के लिए सैनिकों को भेजने के लिए कहा। परमेश्वर कभी-कभी हमें स्थिर रहने के लिए कहते हैं; कभी-कभी वह हमें लड़ने के लिए कह सकते हैं। लेकिन इस मौके पर, उन्होंने उन्हें चुपचाप रहने तथा देखने के लिए कहा कि क्या हो रहा है। परमेश्वर ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह इस घटना में उनके लिए लड़ेंगे। परन्तु एक और घटना में, जब अमालेकी लड़ने को आए, तो परमेश्वर ने उन्हें वैसा ही नहीं बताया। उन्होंने उनसे यह नहीं कहा कि तुम चुपचाप रह सकते हो और वह उनके लिए लड़ेंगे। इसके बजाय, उन्होंने उनसे लोगों को इकट्ठा करने, युद्ध के लिए जाने के लिए कहा तथा उनसे वादा किया कि वह उन्हें जीत दिलाएंगे। हमें परमेश्वर के निर्देशानुसार इनमें से किसी भी कार्य में शामिल होने के लिए तैयार रहना चाहिए। अब, उनके सामने एक बड़ी चुनौती थी - एक तरफ लाल सागर था, और दूसरी तरफ फिरौन की सेना थी। इस्राएलियों को जंगल के बीच में रखा गया था और वे आसानी से बच नहीं सकते थे। उनके सामने समुद्र की गर्जना और पीछे फिरौन की दौड़ती सेना के बावजूद, परमेश्वर ने उन्हें चुपचाप रहने के लिए कहा। तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तू क्यों मेरी दोहाई दे रहा है? इस्राएलियों को आज्ञा दे कि यहाँ से कूच करें" (निर्गमन 14:15)।

"और तू अपनी लाठी उठाकर अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, और वह दो भाग हो जाएगा; तब इस्राएली समुद्र के बीच होकर स्थल ही स्थल पर चले जाएँगे" (निर्गमन 14:16)

लाल समुद्र को दो-भाग करने की अपनी योजना के बारे में परमेश्वर ने मूसा को आगे निर्देश नहीं दिया। केवल उसी क्षण, परमेश्वर ने उसे अपनी लाठी को उठाने के लिए कहा ताकि समुद्र विभाजित हो जाए और उन्हें बीच से निकलने दे। पानी विभाजित हो गया और इस्राएली सूखी भूमि पर समुद्र के बीच से गुजरे, और उनकी दाहिनी ओर और उनके बायीं ओर 25 से 30 मीटर की ऊँचाई तक पानी की दीवार थी। और बादल का खम्भा भी आगे से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया, और मिस्र और इस्राएल की सेना के बीच में आ गया। इस्राएलियों के लिए यह खास विशेषाधिकार था क्योंकि वे चुनी हुई पीढ़ी थे। परमेश्वर ने बादल के खंभे के द्वारा एक सीमा रखी ताकि दुश्मन उन्हें छू न सकें या उन पर हावी न हो पाए। परमेश्वर जिन्होंने उनकी अगुवाई की, उसी तरह हमारे और शैतान के बीच हमारी दैनिक चुनौतियों में भी खड़े होंगे। वह शैतान के विरुद्ध कहेंगे, "वे मेरे बच्चे हैं, छुड़ाए गए और धन्य पीढ़ी हैं, मैंने उन्हें मिस्र के पाप से छुड़ाया है। कोई बुराई हमें छू नहीं सकती! डरो मत! कौन तुम पर हावी हो सकता है? हम तब तक सुरक्षित रहेंगे जब तक जैसे हम उनके मार्गों पर चलते हैं। परमेश्वर हमारे लिए लड़ेंगे!

मेरी प्यारी बेटी व बेटे, क्या तुम आज अपने मन में चल रही किसी बात से डरते हो? यीशु कहते हैं, 'मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम्हें क्यों डरना है?' पुनर्जीवित यीशु आज व हमेशा के लिए आपके हैं! जब आप स्वयं को उनके प्रति विश्वास में समर्पित करते हैं, तो आपको बड़ी शांति और आनंद मिलेगा। परमेश्वर आपके लिए लड़ेंगे तथा आपको जीत दिलाएंगे!

साहसपूर्वक कार्य करना

विजेता बनने की ख्वाहिश रखने वाले युवाओं को नमस्कार। इस धरती पर हर इंसान जीतने के लिए पैदा हुआ है। लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं समस्याएं, असफलताएं व अपमान भी हमारे साथ बढ़ते हैं। इस वजह से कई लोगों ने अपने प्रयास आधे राह में ही बंद कर दिए हैं क्योंकि उन्हें देखकर लोगों को थकान महसूस हुई। कुछ ही लोग सारी नकारात्मकता को पीछे छोड़ देते हैं, आगे बढ़ते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। इस बारे में सभी को सोचने के लिए हम आपको एक महिला की उसके जीवन में उपलब्धि के बारे में बताना चाहेंगे।

कल्पना सरोज का जन्म महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में एक बेहद गरीब परिवार में हुआ था। हालांकि उनका परिवार बड़ा है, लेकिन उनकी आय बहुत कम थी। हालाँकि एक तरफ गरीबी तो थी, कल्पना को अपने घर के पास के बच्चों के साथ खेलने की अनुमति नहीं थी क्योंकि वह एक बहुत ही पिछड़े समुदाय से थी। स्कूलों में भी उसे अपने सहपाठियों के साथ बैठने की अनुमति नहीं थी।

कल्पना का नन्हा सा दिल जहां ऐसी बातों से जूझ रहा था, वहीं उसकी जिंदगी में एक और ऐसी घटना घटी जिसने कल्पना को झकझोर कर रख दिया। जब वह सातवीं कक्षा में पढ़ रही थी तो शादी और परिवार का अर्थ जानने से पहले ही उसे बाल विवाह में धकेल दिया गया। इससे पहले कि वह सोचती कि उसकी शादी हो चुकी है कल्पना के सिर पर एक और भयानक घटना घटी। जिस घर में कल्पना की शादी हुई उस घर में 10 लोग थे। कल्पना को उसकी हर छोटी सी गलती के लिए पीटा गया। यह देखकर, कल्पना के पिता ने कहा कि उसका वहाँ रहना बहुत हुआ और वह कल्पना को अपने घर ले आया।

कल्पना अपने पिता के घर में थी। फिर उसने नौकरी के लिए आवेदन करना शुरू कर दिया क्योंकि उसने किसी के लिए बोझ न बनने का फैसला किया। चूंकि उसकी उम्र और उसकी शैक्षणिक योग्यता बहुत कम थी, इसलिए उसे कोई नौकरी नहीं दी गई। जल्द ही कल्पना ने स्वरोजगार करने का फैसला किया, सिलाई सीखी और सिलाई की थोड़ी सी रकम से उसने एक नई सिलाई मशीन खरीदी। वह उत्साह से अपना व्यवसाय कर रही थी। लेकिन गांव वाले कल्पना के जीवन के बारे में बुरा-भला कहने लगे। यह सुनकर दुखी हुई कल्पना ने आत्महत्या करने का प्रयास किया लेकिन उसे बचा लिया गया।

कल्पना ने उसके बाद उस शहर में न रहने का फैसला किया। अपने माता-पिता की अनुमति से वह मुंबई चली गई। उसे मुंबई की एक गारमेंट फैक्ट्री में नौकरी मिल गई। उसने

धीरे-धीरे उन्होंने कंपनी के सभी कर्जों को चुका दिया।

शांतिपूर्वक और सूक्ष्मता से सिलाई की कला सीखी। अपनी नौकरी में दिखाई गई रुचि के कारण उसे अपने वेतन में धीरे-धीरे वृद्धि प्राप्त हुई। लेकिन कल्पना के जीवन में यह शांति अधिक समय तक नहीं टिकी। कल्पना के पिता की नौकरी चली गई। इसलिए, उसके पूरे परिवार को उसकी आय पर निर्भर रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसने अपनी सारी बचत का उपयोग अपने परिवार को चलाने के लिए किया।

कुछ दिनों के बाद, कल्पना की बहन बीमार पड़ गई और इलाज के लिए धन की कमी के कारण उसकी मृत्यु हो गई। अब कल्पना को पैसे की कीमत समझ में आई। यह समझने के बाद, वह सरकार द्वारा निराश्रितों को उपलब्ध ऋण राशि के साथ कुछ और सिलाई मशीनें लाईं। वह दिन में 16 घंटे कड़ी मेहनत करती थी। मेहनत की कमाई से उसने फर्नीचर की दुकान शुरू की। कल्पना को कई मौके मिलने लगे। एक व्यक्ति कल्पना की तलाश में आया और उससे कहा कि उसके पास जमीन का एक टुकड़ा है और वह इसे आपात स्थिति के लिए 2 लाख रुपये में बेच देगा। लेकिन इसे बेचने में कानूनी दिक्कत आ रही थी। लेकिन कल्पना ने बिना किसी डर के इसे साहसपूर्वक खरीद लिया और अदालत के माध्यम से कानूनी मसले को सुलझा लिया। बाद में उसने उस जमीन पर एक इमारत का निर्माण किया और अचल संपत्ति में पैर रखा।

कमानी ट्यूब्स नाम की एक नामी मशहूर कंपनी उस समय बड़ी मुसीबत में थी। उस कंपनी के विरुद्ध लगातार नुकसान

और कई मामले दर्ज किए गए थे। कल्पना के बारे में जानने वाली कंपनी के महत्वपूर्ण अधिकारियों ने सहायता के संबंध में उनसे संपर्क किया। कल्पना उस क्षेत्र में गई। उसने प्रतिभाशाली विशेषज्ञों को लगाया और कमानी ट्यूब्स कंपनी में समस्याओं को हल किया। वह वर्ष 2000 में कंपनी की प्रमुख बनीं। धीरे-धीरे उन्होंने कंपनी के सभी कर्जों को चुका दिया। उन्होंने पिछले तीन वर्षों से लंबित श्रमिकों के वेतन का भुगतान किया। अब कल्पना के नेतृत्व में कमानी ट्यूब सफलतापूर्वक चल रही है। उन्हें वर्ष 2013 का पद्म श्री पुरस्कार भी मिला। भारत सरकार ने उन्हें भारतीय महिला बैंक के निदेशकों में से एक के रूप में नियुक्त करके सम्मानित किया। कल्पना अकेली खड़ी रही और संघर्ष चाहे जो भी हो, जीत गई।

प्रिय युवा! इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कौन हैं, हम किस परिवार में पैदा हुए हैं और हमारे आसपास की परिस्थितियां कैसी हैं। सफलता तब मिलेगी जब आप किसी भी स्थिति में हिम्मत हारे बिना साहस और लगन से काम लेंगे। कल्पना की तरह साहसी होने की हिम्मत रखें! सफलता आपकी होगी!

Compiled Caleb

नाईन की विधवा

वह एक विधवा थी। उसके इकलौते बेटे की भी मौत हो गई थी। जब उसके पति की मृत्यु हो गई, तो उसके पास साथ रहने के लिए उसका इकलौता प्रिय बेटा बचा था। उसने सोचा होगा कि वह उसकी एकमात्र जीवन रेखा है। लेकिन अब उसकी भी मौत हो चुकी है। उसके दुख में उसकी देखभाल कौन करेगा? इस दुख को सह न पाकर यह माँ रो-रोकर अपने बेटे के अंतिम संस्कार में जा रही थी। जब यीशु वहां से गुजर रहे थे, तो इस माँ का बोझ देखकर उनका हृदय उसके लिए पिघल गया। उन्होंने दया व दिलासे से "मत रो" कहकर उसे सांत्वना दी। तब उन्होंने जाकर उस अर्थी को छुआ जिस पर वे उसे ले जा रहे थे, और उन्होंने कहा, "हे जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!" (लूका 7:13,14)। तुरंत, मरा हुआ व्यक्ति उठ बैठा और बात करने लगा। और यीशु ने उसे उसकी माता को लौटा दिया। यह देख वह माँ खुशी से और आश्चर्य से रो पड़ी होगी कि क्या यह कोई सपना है या हकीकत।

प्रिय युवा! हो सकता है कि आप इस माँ की तरह रो रहे हों और शोक मना रहे हों, यह सोचकर कि आपको अकेला छोड़ दिया जा रहा है या आप जल्द ही अकेले रह जाएंगे। चिंता न करें! वह यीशु जो दिलासा देते हैं वह आपके साथ है।

दुख में आराम!

एम्मा व्हिटमोर

एम्मा व्हिटमोर का जन्म 25 अक्टूबर 1890 को अमेरिका में हुआ था। परमेश्वर ने उसे जिसे 12 साल से दिल की बीमारी थी, एक सुंदर तरीके से चंगा किया। परमेश्वर ने उसे अपनी उन योजनाओं को प्रकट किया जिसे वह उसके द्वारा स्पष्ट रूप से पूरा करने वाले थे। व्हिटमोर ने खुद को परमेश्वर की इच्छा के सामने समर्पित कर दिया। उसने अपनी संपत्ति गरीबों के कल्याण पर खर्च कर दी। उसने प्रचार के किसी भी शब्द से बढ़कर यीशु के प्रेम को दिखाया। चलते-फिरते मसीह की तरह, वह एक दयालु उपकारी स्त्री थी। उसने "आशा का द्वार" नामक एक संस्था शुरू की, जिसके माध्यम से उसने बहुत से गरीब परिवारों व महिलाओं को आराम एवं परोपकार प्रदान किया। 1931 में जब एम्मा ने इस दुनिया में अपनी दौड़ पूरी की, तब तक दुनिया भर में 100 से अधिक "आशा का द्वार" संस्थाएं थीं।

प्रिय युवा! एम्मा व्हिटमोर ने एक ऐसा जीवन जीया जो हमें दिखाता है कि हमें वही दया रखनी चाहिए जो दया यीशु मसीह ने कंगालों के लिए दिखाई थी। क्या आप जिस किसी से मिलें और अभिवादन करें, क्या आप उसे करुणा दिखाने के लिए भी आप प्रतिबद्ध होंगे?

पतरस

यीशु के बारह शिष्यों में से एक शमौन पतरस का जन्म 1 ईस्वी में पहली शताब्दी में बैतसैदा शहर में हुआ था। वह एक मछुआरा था। एक दिन शमौन ने पूरी रात मछली पकड़ने की कोशिश की, लेकिन एक भी मछली नहीं पकड़ पाया। थके हुए और निराश होकर उसने अपनी नाव किनारे पर खड़ी कर दी। अगली सुबह यीशु शमौन की नाव पर चढ़ गया और लोगों को उपदेश दे रहा था। और जब वह प्रचार कर चुका, तो यीशु ने शमौन से कहा, कि नाव को गहरे जल में ले जा, और जाल डाल दे। शमौन ने कहा, "स्वामी, हम ने सारी रात कड़ी मेहनत की है और कुछ भी नहीं पकड़ा है। लेकिन क्योंकि आप ऐसा कहते हैं, मैं जाल डाल दूंगा।" और जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने इतनी बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ीं कि उनके जाल टूटने लगे और उनकी दो नावें भर गईं। जब पतरस ने यह देखा, तो वह यीशु के पाँव पर गिर पड़ा और यीशु से उससे दूर जाने की विनती की कि वह एक पापी मनुष्य है और जब यीशु ने उसे बुलाया तो उसने सब कुछ छोड़ दिया और यीशु के पीछे हो लिया।

प्रिय युवाओं! हमारे जीवन में, पतरस के जैसे, हमने भी बहुत बार कोशिश की होगी और असफल और निराश हुए होंगे। एक बार यीशु की आवाज़ को सुने। जिस परमेश्वर ने पतरस की असफलता को एक दिन में विजय में बदल दिया, वह आपकी असफलता में आपको भी आराम देंगे!

असफलता में आराम!

एरिक लिडेल

एरिक लिडेल का जन्म चीन में स्कॉटिश मिशनरी माता-पिता के बेटे के रूप में हुआ था। उन्होंने बचपन से ही खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। वह 400 मीटर दौड़ में विश्व रिकॉर्ड धारक थे। 1924 में फ्रांस की राजधानी पेरिस में ओलंपिक खेलों की शुरुआत हुई। एरिक उस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते थे। लेकिन 100 मीटर तेड़ दौड़ के लिए मुकाबला रविवार को रखा गया। उनके मन में एक लड़ाई थी कि दौड़ में दौड़ें और प्रसिद्धि पाएं या प्रभु की आज्ञा का पालन करें। एक साक्षी बने या विजेता बने। एरिक प्रभु के दिन किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लेने के अपने निर्णय में दृढ़ थे। वह 100 मीटर की दौड़ से चूक गए, लेकिन फिर भी उन्होंने एक अन्य दिन 400 मीटर की दौड़ में स्वर्ण जीतकर विश्व रिकॉर्ड बनाया। जो बात एरिक लिडेल के जीव में एक असफलता की तरह लग रही थी परमेश्वर ने उसे एक उपलब्धि में बदल दिया क्योंकि वह दूसरे लोग क्या कहेंगे इसकी बजाय परमेश्वर के लिए जलन रखते थे।

प्रिय युवाओं! प्रभु के लिए सरगर्मी के साथ खड़े रहकर यदि आपने अपने जीवन में कई असफलताओं का सामना किया है तो चिंता न करें। आराम देने वाले परमेश्वर आपकी असफलताओं को विजय में बदल देंगे।

परिवार की बेदारी

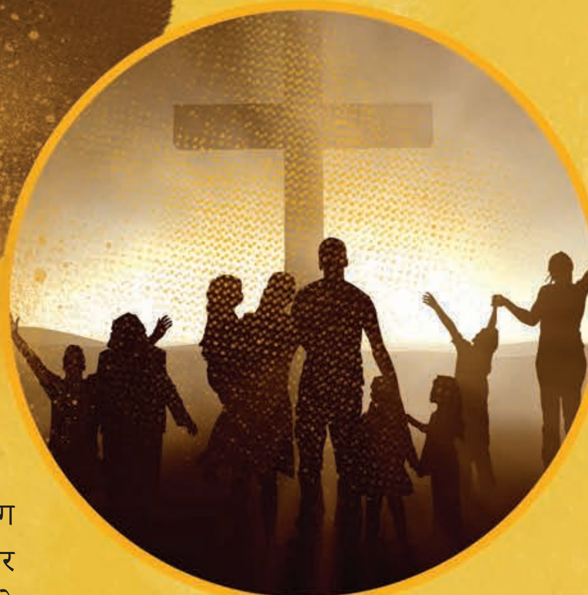
Event Sathish

इन दिनों "बेदारी" शब्द का प्रयोग मसीहियों तथा आत्मिक क्षेत्र के बीच कई बार किया जाता है। सबसे महत्वपूर्ण बेदारी वह बेदारी है जो परिवारों के भीतर होती है। जब एक परिवार में बेदारी होता है, तो उस परिवार का प्रत्येक व्यक्ति मसीह के साक्षी के रूप में खड़ा होता है। प्रत्येक परिवार जो परमेश्वर के साक्षी के रूप में खड़ा है, मसीही कलीसियाओं के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाता है और परमेश्वर द्वारा दिए गए वादों को पूरा करने में मदद करता है। वे कलीसिया की रीढ़ हैं। इसके अलावा, हमारे परमेश्वर के राज्य का विस्तार उनके माध्यम से हो रहा है। प्रार्थना हमारे देश में होने वाली हर बेदारी का आरंभ है। प्रार्थना करने वाला व्यक्ति ही अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य से प्रार्थना करवा सकता है। कुरनेलियुस, सूबेदार, एक प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था और इसलिए उसका पूरा परिवार प्रार्थना करता था और परमेश्वर का भय मानता था। "वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों* को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था"। प्रेरितों के काम 10:2

हालाँकि एक मसीही होने के नाते कुरनेलियुस की बड़ी जिम्मेदारी थी, वह परमेश्वर को प्राथमिकता दोता था। एक परिवार का मुखिया वह व्यक्ति होता है जो परिवार को चलाता है, परिवार की जिम्मेदारियों को लेता है और उन्हें निभाता है। परिणामस्वरूप, यह केवल परिवार के मुखिया, पति, की जिम्मेदारी नहीं होती कि वह परिवार की बेदारी के लिए प्रार्थना करे, लेकिन यह पत्नी की जिम्मेदारी भी होती है। जो स्त्री परमेश्वर का भय मानती हो वह उस परिवार के लिए खज़ाना होती है। प्रत्येक बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है: "हर बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है, पर मूढ़ स्त्री उसको अपने ही हाथों से ढा देती है" (नीतिवचन 14:1)। जब अबीगैल को पता चला कि दाऊद अपने 400 योद्धाओं के साथ उसके घराने का नाश करने को आ रहा है, तो उसने फुर्ती कर दाऊद और उसके योद्धाओं के लिए खाने की वस्तुएं तैयार की। वह रोटी, दाखमधू, भेड़ों का मांस, और भूना हुआ अनाज और अंजीर अपने साथ ले गई। ऐसा कर उसने अपने घराने पर आने वाले विनाश को टाल दिया। एक व्यक्ति में बेदारी न केवल उसके सारे परिवार को नया करती है, लेकिन समाज में भी बदलाव लाती है।

परमेश्वर के जन, जॉन स्कडर को बचाया गया और उसने

यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। इसके बाद उसने खुद को पूर्णकालिक सेवकाई के लिए समर्पित कर दिया। इसके अलावा, उसने अपने 7 बेटों आर और 2 बेटियों को भी परमेश्वर की सेवा में समर्पित कर दिया। इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि उसके परिवार में 43 सदस्य मसीही सेवकाई सेवा के लिए समर्पित थे। यह इडा स्कडर नाम की जॉन स्कडर की पोती ही है, जिसने वेल्लोर में सी.एम.सी. अस्पताल की स्थापना की जो एशिया के सबसे अच्छे अस्पतालों में से एक है। इडा स्कडर द्वारा स्थापित किया गया यह अस्पताल कई परिवारों के लिए सबसे बड़ा आशीर्वाद साबित हुआ। अब हम उस परिवर्तन के साक्षी हैं, जो परिवर्तन

जॉन स्कडर के परिवार की बेदारी तमिलनाडु में लेकर आई है।

मेरे प्यारे युवाओं जो इसे पढ़ रहे हैं!! यदि आप अपने परिवार में बेदारी के लिए दिन-रात प्रार्थना करना शुरू करते हैं, तो परमेश्वर आपकी प्रार्थना सुनेंगे और आपके परिवार पर बेदारी की अग्नि भेजेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आपका पूरा परिवार परमेश्वर के गवाह के रूप में खड़ा होगा और यीशु की महिमा करेगा। इस प्रकार, जो परिवार प्रतिदिन प्रार्थना करता है, वह मसीह पर निर्भर करता है और परमेश्वर की महिमा करता परिवार बनकर वह उन्हें दर्शाता है।

गे जारी है....

आत्माओं को बचाने के मिशन पर एक छोटी लड़की

आरामी सेना ने इज़राइल की एक अनाम छोटी लड़की को बंदी बना लिया और वह नामान की पत्नी के लिए काम करने के लिए दासी के रूप में लायी गई। माँ की सबसे प्यारी बेटी होने के नाते, उसे अपनी माँ से दूर रहकर कितना कष्ट उठाना पड़ा होगा। चूँकि उसे एक गैर-इस्राएली घर में काम करने के लिए रखा गया था, तो उसका नन्हा सा दिल कितना घबरा गया होगा। लेकिन फिर भी, अपने स्वामी और शक्तिशाली आरामी राजा के लिए सेनापति, नामान को कोढ़ से पीड़ित देखकर, वह न तो उसने मुँह मोड़ा और न ही उस व्यक्ति को देखकर चुप रही जिसने उसे दुःख दिया था। उस छोटी लड़की ने नामान की पत्नी को सलाह दी, यदि मेरा स्वामी सामरिया में नबी के पास जाएगा, तो वह उसे उसके कोढ़ से चंगा करेगा। फिर बिना किसी देरी के, नामान की पत्नी ने यह बात नामान को बता दी। नामान ने युवती की बात सुनी और राजा के पास गया, आराम के राजा ने इस्राएल के राजा के लिए चिट्ठी दी। वह एलीशा से भेंट करने को गया। तब एलीशा ने कहा, जा, और यरदन में सात बार डुबकी लगा, तब तेरा चमड़ी ठीक हो जाएगी, और तू शुद्ध हो जाएगा। नामान ने आशा की होगी कि वह नबी उसकी चमड़ी को छूकर उसे चंगा करेगा, परन्तु वह केवल यरदन में सात बार स्नान करने के लिए कह रहा है। उसने सोचा होगा कि क्या उसके देश में कोई नदी नहीं है जहाँ वह डुबकी लगा पाए? लेकिन उसके सेवक ने कहा, वह तुझ से केवल डुबकी लगाने को कह रहा है। जब उसने नबी के कहने के अनुसार यरदन में सात बार डुबकी लगाई, तब उसका कोढ़ चंगा हुआ, और उसकी चमड़ी बालक की चमड़ी के समान सुन्दर हो गई।

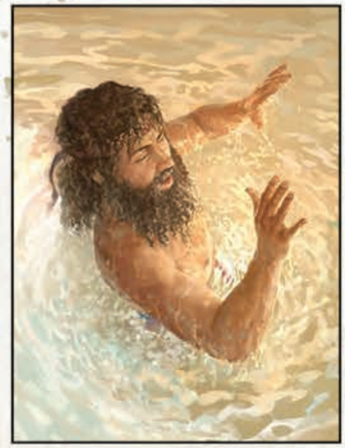

यदि नामान उस छोटी लड़की व अपने सेवक की सलाह को ठुकरा देता, उसे चंगाई न मिली होती। वह मात्र एक गुलाम है यह न सोचकर और उसकी सलाह पर उसके स्वामी की क्या प्रतिक्रिया होगी इसके बारे में न झिझकते हुए उसने तुरन्त उससे भलाई की जिसने उससे बुराई की थी। ज़रा सोचिए जब उसका स्वामी चंगाई पाकर लौटा होगा और जीवित परमेश्वर का विश्वासी बन गया होगा तो उसे कितनी खुशी हुई होगी?

प्रिय युवा! यदि केवल एक गुलाम लड़की जीवित परमेश्वर की गवाही साझा कर सकती है और अपने स्वामी की आत्मा को बचा सकती है, तो ज़रा सोचिए कि आप अपने शैक्षणिक संस्थान और कार्यस्थल में कितनी आत्माओं को बचा सकते हैं। क्या आप नामान के घर की छोटी लड़की की तरह किसी भी परिस्थिति में सुसमाचार बाँटने के लिए तैयार हैं?

परमेश्वर जो शान्ति देता है

मेरी प्यारी युवा बहनों व भाइयों! इससे पहले कि हम इस लेख में आगे बढ़ें, मैं प्रभु से प्रार्थना करती हूं कि आप सभी प्रभु यीशु मसीह के साथ प्रेम के संबंध में निरंतर बढ़ते जाएं।

प्रिय युवाओं! हम अपने जीवन में कई परिस्थितियों का सामना करते हैं। कुछ हमारे लिए खुशियाँ लाती हैं और कुछ दर्द और पीड़ा लाती हैं। जब हम दु:ख के राह पर चलते हैं, तो हमारा दिल आराम और एकांत के लिए लालसा करता है। यह मनुष्य का स्वभाव है। क्योंकि परमेश्वर ने हमें इस तरह से बनाया है कि हमारी आत्मा एक व्यक्ति के संबंध की अपेक्षा करती है। हम जीवन भर अकेले नहीं रह सकते।

उदाहरण के तौर पर, मैं आपको मेरे जीवन में एक घटी घटना बताती हूँ। मेरे कॉलेज के समय में कई आई.टी. कंपनियां छात्रों को नौकरी देने के लिऐ कैंपस इंटरव्यू के लिए आती थीं। पढ़ाई पूरी करने से पहले नौकरी पाने का यह एक अच्छा अवसर होता था मैंने बहुत सी अपेक्षाओं व उम्मीदों के साथ इंटरव्यू में भाग लिया। अंतिम नतीजे में मेरे नाम की घोषणा नहीं की गई थी। मेरा दिल टूट गया और यह दुखद था। मेरे माता-पिता नतीजे की उम्मीद कर रहे थे! मैं कैसे कह सकती थी कि मुझे नौकरी नहीं मिली, में अंदर ही अंदर इस बात से जूझ रही थी। उस समय मेरी मां ने मुझे टेलीफोन किया। यह सोचकर कि वे क्या कहेंगे जो भी हुआ था मैंने आंसुओं के साथ सब कुछ बता दिया। लेकिन मेरी माँ के शब्दों ने संघर्ष में पड़े मेरे मन को शांति दी और कहा। "चिंता मत करो रवि! यह दुनिया का अंत नहीं है। मेरी माँ ने कहा, "तुम्हें इससे बेहतर नौकरी मिलेगी। हार न मानो और आगे बढ़ने की कोशिश करो।" मुझे सुकून महसूस हुआ।

मेरी प्यारे बहनों व भाइयों! यदि किसी व्यक्ति के वचन हमारे मन में शांति और आराम लाते हैं, तो सोचें कि हमारे परमेश्वर के वचन, सहायक एवं परमेश्वर की उपस्थिति से हमें कितना आराम दिया जाएगा। हमारी जरूरत के समय लोग आसपास नहीं होते हैं। परन्तु यूहन्ना 14:16 में बाइबल कहती है, "और मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।"

देखिए! क्या शानदार वादा है। हां दोस्तों! पवित्र आत्मा एक सहायक के रूप में हमेशा हमारे साथ रहना पसंद करता है। वह हमारे साथ एक प्यारे रिश्ते में रहना चाहता है। आप जो इस लेख को पढ़ रहे हैं, हो सकते है कि आप भी दुख की राह पर चल रहे हों। चिंता मत करें! परमेश्वर आपके निकट है। क्या आप अपना हृदय खोलेंगे और सहायक प्रभु को अपने अंदर निवास करने देंगे? वह हमेशा आपके साथ आपके सहायक के रूप में रहना पसंद करता है।

प्रार्थना गाइड

मार्च - 2022

1 आइए महिलाओं के प्रति बढ़ते जा रहे अपराधों के लिए प्रार्थना करें

2 आइए प्रार्थना करें कि सरकार महिलाओं के प्रति इन अपराधों के खिलाफ कार्रवाई करे

3 आइए हमारे देश में महिलाओं की सुरक्षा के लिए और अपराधों के घटने के लिए प्रार्थना करें

4 आइए परिवारों में महिलाओं के प्रति हिंसा तथा उनके अधिकारों की रक्षा के लिए प्रार्थना करें।

5 प्रतिदिन जबरदस्ती के 77 मामले दर्ज किए जा रहे हैं और प्रार्थना करते हैं कि इन महिलाओं को वह न्याय मिले जिसकी वे हकदार हैं।

6 18 से ऊपर की आयु की 28,000 महिलाएं इन अपराधों के कारण प्रभावित हो रही हैं। इनकी रोकथाम के लिए प्रार्थना करें।

7 एक लाख से ज्यादा महिलाएं अपने पति व ससुराल वालों द्वारा दुर्व्यव्हार पाती हैं; आइए इन महिलाओं के अपने घरों में इनकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

8 6966 पंजीकृत मामले हैं जो दहेज की समस्या के कारण महिलाओं की मृत्यु का दावा करते हैं; आइए दहेज प्रथा का परित्याग करें।

9 आइए महिलाओं और बच्चों को नशे की लत से बचाने के लिए प्रार्थना करें।

10 आइए प्रार्थना करें कि पुलिस महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों के विरुद्ध सख्त कदम उठाए।

11 भारत में, जबरन शादी व पैसे जैसे कारणों से महिलाओं का अपहरण कर लिया जाता है और हत्या कर दी जाती है। आइए प्रार्थना करें कि इसमें शामिल गिरोहों का पर्दाफाश हो और उन्हें दंडित किया जाए।

12 राष्ट्रीय महिला आयोग का कहना है महिलाओं के खिलाफ अपराधों में उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है। आइए प्रार्थना करें कि इस दायरे में काम करने वाली आत्माओं को रोका किया जाए।

13 वर्ष 2021 में, केवल उत्तर प्रदेश में महिलाओं के खिलाफ 31,000 मामले दर्ज किए गए हैं। प्रार्थना करें कि ये मामले जल्द सुलझें।

14 पिछले 50 सालों में, दुनिया भर में, 14 करोड़ 26 लाख महिलाएं गायब हो चुकी हैं। आइए प्रार्थना करें कि सरकार इन अपराधों के खिलाफ उचित कार्रवाई करे।

15 जो लोग औरतों का अपहरण करके और उन्हें बेचकर पैसा कमाते हैं उनके लिए प्रार्थना करें कि वे अपनी गलती का एहसास करें तथा पश्चाताप करें।

16 आइए कार्यस्थलों में महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न के लिए प्रार्थना करें।

17 यूनिसेफ के अनुसार 2017 में, 27% महिलाओं की शादी 18 साल से पहले हो रही है। आइए बाल विवाह के खिलाफ सख्त कानूनों के लिए प्रार्थना करें।

18 श्रीलंका में आए अकाल के लिए प्रार्थना करें। लोग अपने परिवार का पेट पालने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। आइए प्रार्थना करें कि यह सब ठीक हो जाए।

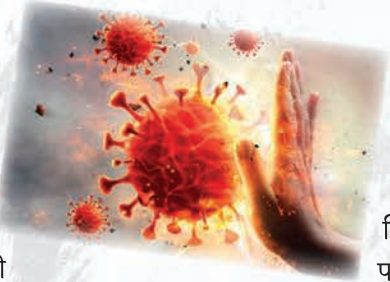

19 उच्च माँग के कारण आवश्यक वस्तुओं की कीमत बढ़ गई है। प्रार्थना करें कि चावल एवं अन्य अनाज की आपूर्ति हो और कीमते सामान्य हो जाएं।

20 उन 30 लाख लोगों के बचाए जाने के लिए प्रार्थना करें जो ऑनलाइन रम्मी खेलों के आदी हैं।

21 उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो अपना सारा पैसा दाँव पर लगाकर ऐसे खोलों को खेलते हैं और बाद में बढ़ते कर्ज के कारण आत्महत्या कर लेते हैं।

22 जो इस खेल को खेलते हैं उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए और केंद्र सरकार द्वारा उचित कार्रवाई की जाने के लिए प्रार्थना करें।

23 सरकार द्वारा भारत से ऑनलाइन रम्मी खेलों पर प्रतिबंध लगाए जाने के लिए प्रार्थना करें।

24 भूकंप, तूफान व आग के कारण शहरों और कस्बों में हो रहे विघ्नों के लिए प्रार्थना करें। आइए इन लोगों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

25 आइए हम अपने देश में घातक रोगों के कारण हो रहे विनाश के लिए प्रार्थना करें।

26 भारत में 2 लाख कलीसियाओं और 24.8 करोड़ परिवारों की बेदारी के लिए प्रार्थना करें।

27 हम उन आत्माओं के विनाश के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर के उन लोगों के विरुद्ध कार्य करती हैं जो बेदारी के लिए चुने गए हैं, और उन विश्वासियों के लिए प्रार्थना करें जो अपने दर्शन को भूलाने की परीक्षा में हैं।

28 आइए अपनी कलीसियाओं और सेवकाईयों के लिए प्रार्थना करें कि वे ऐसी निर्मलता रखें जो परमेश्वर को पसंद है।

29 आइए कलीसियाओं की पवित्रता के लिए प्रार्थना करें।

30 आइए उन दुष्टआत्माओँ के विरुद्ध उनके विनाश के लिए प्रार्थना करें जो झूठी शिक्षाओं, झूठी भविष्यवाणियों व झूठे सेवकों और भविष्यद्वक्ताओं और इन आत्माओं को नष्ट करने के लिए बढ़ावा देती हैं।

31 लोगों को अंधेरे व अज्ञानता से बचने के लिए और लोगों में आत्मिक जागरूकता आने के लिए प्रार्थना करें।

Petra

पतरस के साथ एक यात्रा

क्या आप पतरस के साथ यात्रा करने के लिए तैयार हैं? तो फिर, जल्दी करें! जल्दी से चढ़ जाएं! यह नाव चेलों के साथ कफरनहूम की ओर जा रही है जो किनारे के दूसरी तरफ है। (मत्ती 14:22,23, मरकुस 6:47-51, यूहन्ना 6:16-21)। थोड़ा विचार करें कि, कैसा लगेगा यदि आपको सच में यीशु और उनके चेलों के साथ नाव में यात्रा करने का अवसर मिले। इस विचार के साथ, क्या अब हम पतरस के साथ अपनी यात्रा जारी रख सकते हैं?

विश्वास और अविश्वास

रोमी लोगों की समझ के अनुसार, यह रात के चौथे पहर में हुआ जिसे तमिल भाषा में "जामम" कहा जाता है। वह विशेष समय सुबह 3 बजे से 6 बजे तक का था। गलील के समुद्र के किनारे लहरें ऊँचीथीं। तेज हवाओं के साथ, समुद्र ज़ोर से डगमगाता रहा था, और समुद्र में यात्रा कठिन हो रही थी। समुद्र के बीच में संघर्ष कर रही नाव में सवार चेले और भी घबरा गए। मौत के डर से उनके मनों में ऐसे सवाल आने लगे "क्या हम जीवित रहेंगे? या नहीं?" वे नाव से बाहर देखते हैं और यीशु शांति से समुद्र के ऊपर चलता हुआ पाते हैं। जब हम उनसे उम्मीद करते हैं कि वे अपना तनाव छोड़ दें और अब आराम करें कि उन्होंने यीशु को देख लिया है, तो जिन चेलों को दुष्ट आत्माओं को निकालने का अधिकार मिला था (मत्ती 10:1), उन्होंने यह नहीं सोचा कि यह यीशु है, बल्कि वे भगदड़ में घबरा गए, यह सोचकर कि यह एक दुष्ट आत्मा है।

यीशु ने उनके मन की भावनाओं को समझा और उनसे न डरने और साहसी होने के लिए कहा। तब से हम नहीं जानते कि पतरस को बहादुरी कहाँ से मिली, वह यीशु से कहता है, यदि यह वे हैं तो उसे पानी पर चलने की आज्ञा दें। अचानक उसका जो तनाव था वह गायब हो गया, और वह शांत हो गया, और अब वह कुछ ऐसा करना चाहता था जो गुरुत्वाकर्षण को चुनौती दे और कुछ ऐसा जो मनुष्यो द्वारा करना संभव न हो। यीशु के सच्चे चेले के रूप में, और दिल में एक उत्सुकता के साथ, वह यीशु की तरह पानी पर चलना चाहता है। अन्य किसी चेले में पानी पर चलने की इच्छा नहीं थी। पतरस की यह इच्छा, जिस तरह से वह अनुमति माँगता है, और यीशु में उसका विश्वास उसे दूसरे चेलों से अलग करता है और उसे विशेष दिखाता है। पतरस के बारे में हमें जिस स्वभाव पर ध्यान देना चाहिए उनमें से एक यह है कि वह

एक बच्चे की तरह तुरंत अपना मन बदल लेता है। जो व्यक्ति साहस के साथ नाव से निकला और यीशु को देखकर पानी पर चलने लगा, वह

तेज़ हवा और उँची लहरों को महसूस कर जो सामान्य नहीं थीं, अविश्वास से काँप उठा। वह आश्चर्य महसूस करने लगता है और यह भी संदेह करता है कि क्या वह सच में पानी पर चल रहा है, और इससे वह डूबने लगा। तब भी विश्वास के साथ, कि यीशु उसे नहीं छोड़ेंगे, वह यीशु को बचाने के लिए पुकारता है। उसके संदेह के कारण, यीशु उसे एक कमज़ोर विश्वासी कहते हैं। फिर भी, यीशु के प्यार भरे हाथों ने उसे पकड़ लिया, और जब वे नाव पर चढ़े, तो हवा बदं हो गई।

यह घटना हमें बताती है कि कैसे पतरस का विश्वास समुद्र की लहर की तरह डगमगाता है।

यीशु के बारे में पतरस का वर्णन

यीशु ने अपने चेलों को पूछा कि लोग उन्हें किस रूप में पहचान रहे हैं। (मत्ती 16:13-23, मरकुस 8:27-29, लूका 9:18-20)। यद्यपि उत्तर के रूप में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, एलिय्याह, यिर्मयाह और कई अन्य भविष्यद्वक्ताओं जैसे बहुत से उत्तर थे, पतरस ने यह कहते हुए उत्तर दिया कि वह जीवित परमेश्वर का पुत्र है। यूनानी शब्द क्राइस्ट का इब्रानी नाम मसीहा है। यहूदी इंतजार कर रहे थे कि मसीहा आएगा और उन्हें रोमियों के शासन से बचाएगा। क्योंकि यीशु शाही वंश से या एक बड़ी सेना के साथ नहीं आए थे, उन्होंने उन्हें मसीह के रूप में स्वीकार नहीं किया। इसलिए, उन्होंने कहा था कि जो कोई भी यीशु को मसीहा कहेगा उसे अपना धर्म छोड़ना होगा। (यूहन्ना 9:22) लेकिन, पतरस वह पहला व्यक्ति था जिसने सभी के सामने निडर होकर यीशु को मसीह कहकर बुलाया, और इससे यीशु का हृदय प्रसन्न हुआ। जबकि यह मांस और लहू में व्यक्त नहीं किया गया था, लेकिन स्वर्गीय पिता ने अन्य सभी चेलों के बीच इसे पतरस को व्यक्त करने के लिए चुना था, यीशु ने कहा कि वह धन्य है। इसके साथ ही, यीशु ने केवल पतरस से ही कहा कि "वह उस पत्थर पर अपनी कलीसिया का निर्माण करेंगे", जो कि यीशु के बारे में परमेश्वर की योजना है।इसके साथ ही, पतरस को इस योजना पर काम करने के लिए वे उसे स्वर्ग के विशेष द्वार देते हैं। जो एक विशेष आशीष है। पतरस इसका उपयोग करता है और यीशु को मारने वाले यहूदियों को यीशु का प्रचार करना शुरू करता है। पतरस के एक उपदेश में, बहुत से लोगों (3000-5000) ने यीशु को स्वीकार किया और बपतिस्मा लिया (प्रेरितों के काम 2:14-41, 4:4)। उसने कुरनेलियुस के घर में रोमियों को भी प्रचार किया, और उन्होंने बपतिस्मा लिया (प्रेरितों के काम 10)। इसके साथ ही, बहुत सारे चमत्कारों और चिन्हों के साथ उसने बहुत से मसीहियों को यीशु में विश्वास दिलाया। यदि एक पापी का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप हो जाता है तो स्वर्ग में बहुत खुशी होती है, इसलिए जब पतरस ने तीन हजार और पांच हजार लोगों की उद्धार में अगुआई की तो स्वर्ग में एक महान उत्सव हुआ होगा और यीशु के नाम की बहुत महिमा हुई होगी।

पतरस को डांटा जानायह बात सभी चेले समझ गए थे कि यीशु कौन हैं और इसलिए यीशु ने पूरी योजना को व्यक्त किया जो परमेश्वर ने उनके लिए रखी थी। यीशु अपने चेलों को उस पूरी योजना को व्यक्त करते हैं जो परमेश्वर के पास उनके लिए है जिसमें पीड़ा, क्रूस पर चढ़ाऐ जाना और तीसरे दिन का पुनरुत्थान शामिल था। पतरस जिसने पिता के प्रकाश को प्राप्त किया वह कुछ समय पहले धन्य होने के लिए सराहा गया था, और उसे अन्य चेलों से श्रेष्ठ माना गया था। लेकिन वह परमेश्वर की इच्छा के बजाय अपने विचार व्यक्त करता है। क्योंकि उसने तुरंत अपने विचार बदले, यीशु ने उसे यह कहते हुए डांटा कि वह परमेश्वर के अनुसार नहीं, बल्कि मनुष्यों के अनुसार सोच रहा है।

पतरस के साथ यात्रा कुछ अन्य दिलचस्प घटनाओं के साथ जारी रहेगी...

बाइबल में स्त्रियाँ

पवित्र स्त्रियाँ

मरियम, यीशु की माता

मरियम, एक कुँवारी जो गर्भवती हुई और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह को इस संसार में लाई वह एक पवित्र स्त्री है (लूका 1:26-30)। क्या आप मरियम के समान बनेंगे जिसने संसार के उद्धार के लिए कष्ट सहा?

योकेबेद

हालाँकि फिरौन ने सभी नर शिशुओं को नील नदी में फेंकने का आदेश दिया था, उसने अपने बच्चे को तीन महीने तक यहोवा में विश्वास के साथ छिपा रखा था। क्या आप योकेबेद की तरह बनेंगे जो आपने बच्चों की भलाई के लिए कुछ भी कर सकती है?

यिफतह की बेटी

वह पवित्र हृदय से गीत गाकर प्रभु की स्तुति करती है। वह एक आश्चर्यजनक महिला है जो युद्ध में अपने पिता की जीत के बदले परमेश्वर के आगे अपना जीवन बलिदान किए जाने की उसके पिता की प्रतिज्ञा के प्रति बाध्य थी (न्यायियों 11:30-40)। क्या आप उसकी तरह अपने माता-पिता की बात मान रहे हैं? एक पल के लिए विचार करे!

यूसुफ की पत्नी आसनत

हालाँकि वह अन्य देवताओं की पूजा करने वाली स्त्री थी, फिर भी उसने यूसुफ को उन देवताओं की पूजा करने के लिए कभी अपने साथ नहीं लिया। उसने न केवल यीशु को जीवित परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया बल्कि की वह यूसुफ की अच्छी पत्नी भी थी। उसने मसीह के साथ अपनी वाचा को पूरा करने के लिए अपने पति के साथ शांति से अपना जीवन व्यतीत किया और साथ ही पूरे हृदय से उससे प्रेम किया (उत्पत्ति 41:36-52)। आज यदि आप मसीह यीशु के बारे में नहीं जानते हैं, तो आप उन्हें पूरे दिल से स्वीकार कर सकते हैं जैसे आसनत ने किया था।

रूत

रूत एक पवित्र स्त्री है जिसने कभी अपने भविष्य के बारे में नहीं सोचा बल्कि अपनी सास 'नाओमी' के साथ बहुत प्यार से रही (रूत 1-4 अध्याय)

बुद्धिमान स्त्रियाँ

अबीगैल

वह अपने पति की गलती के लिए क्षमा मांगती है। उसके आक्रामक काम और विनम्र क्षमा के कारण, उसने दाऊद को रोक दिया और अपने परिवार का खून बहाए जाने से बचाया, जो उसके सुप्रयोग को दर्शाता है (1शमूएल 25:1-44)। क्या आप अबीगैल की तरह खुद को नम्र करते हैं?

याएल

उसने खुद को परमेश्वर की इच्छा के सामने समर्पित कर दिया। वह अपने देश के लिए छुटकारा लाई। उसे अपने औजार या अपनी ताकत की परवाह नहीं थी। उसने अपने देश की स्त्रियों के लिए कुछ करने के लिए समझदारी से काम लिया। यदि सीसरा बच निकलता तो शायद उस देश की स्त्रियों की पवित्रता को लूट लिया जाता (न्यायियों 4:4-24)। क्या आप स्त्रियों के लिए कुछ करने की सोच लेकर आगे आएंगे?

अकसा

यह जानते हुए कि जिस स्थान पर उसका विवाह हुआ वह एक सूखी भूमि हैं, वह अपने पिता से नाराज नहीं हुई, लेकिन बुद्धिमानी से उसे सोते की भूमि देने के लिए कहा और कालेब से सोते की भूमि प्राप्त की (यहोशू 15:16-19, न्यायियों 1:12-15)। जो आप चाहते हैं क्या आप उसे माँगने व प्राप्त करने के लिए प्रयास करेंगे?

तकोआ की महिला

राजा और अपने पुत्र के बीच शत्रुता को दूर करने के लिए वह पहले अपने आप को परिवर्तित करती है (2शमूएल 14:1-33)। क्या आप एक ऐसे व्यक्ति होंगे जो शत्रुता को बदल दे? या आप शत्रुता लाने का कारण बनेंगे?

विश्वास में सर्वश्रेष्ठ स्त्रियाँ

कनानी स्त्री

यद्यपि यीशु ने उसके लिए कुत्ता शब्द का प्रयोग किया, उसने इसका बुरा नहीं माना, परन्तु यीशु पर विश्वास किया और उनके पीछे हो ली। यीशु उसके विश्वास पर चकित हुए और उसी क्षण उसकी बेटी को चंगा कर दिया (मत्ती 15:22-28)। क्या आप आज अपमानजनक शब्द सुनने में विश्वास करते हैं?

बीमार स्त्री

एक महिला ने 12 साल तक अपनी सारी संपत्ति अपने इलाज के लिए खर्च कर दी। यह सुनकर कि यीशु ने बहुत से लाइलाज रोगों को चंगा किया है, और वह अपने इस प्रकार के विश्वास से चंगी हो गई कि वह यीशु के वस्त्र को छूने से चंगी हो जाएगी (मरकुस 5:25-34)। क्या आपको विश्वास है कि यीशु पुरानी से पुरानी बीमारी को ठीक कर सकते हैं?

स्त्रियाँ जिन्होंने परमेश्वर की सेवकाई की

तबिता

उसने गरीब विधवाओं के लिए कपड़े बनाए और अपने अच्छे कामों से लोगों का दिल जीत लिया। (प्रेरितों के काम 9:36 41)। क्या आप तबीता की तरह अच्छे काम करके परमेश्वर की सेवा करेंगे?

फीबे

प्रारंभिक कलीसियों में स्त्रियों को प्रचार करने की अनुमति नहीं थी। इसलिए, उसे परमेश्वर के वचन का प्रचार करने का कोई अवसर नहीं मिला। फिर भी जो कुछ उससे हो सका उसने मेहमानों की सेवा टहल की और जरूरतमंदों की मदद की (रोमियों 16:1, 2)। क्या आप फीबे की तरह प्रभु के लिए गुप्त रूप से सहयोग देनेवाली सेवकाई करने के लिए समर्पण करेंगे?

स्त्री भविष्यवक्ता

मरियम

यह बाइबल में पुराने नियम की गायिका हैं। जब परमेश्वर ने लाल समुद्र में शत्रुओं को हराया, तो उसने यहोवा की स्तुति गाई (निर्गमन 15:20, 21; मीका 6:4)

दबोरा

वह इस्राएलियों की पहली महिला न्यायाधीश है और एक नबी भी है। (न्यायियों 4:4-24)

प्रेम में सर्वश्रेष्ठ स्त्रियाँ

रिबका

जब एलीएजेर इसहाक के लिऐ दुल्हन को देखने गया, तब उसने एलीएजेर और उसके दस ऊंटों को पानी पिलाया। इसहाक ने अपनी माँ की मृत्यु के लिए 3 वर्ष तक शोक मनाया, लेकिन वह रिबका के प्रेम के कारण अपने दुःख को भूल गया (उत्पत्ति 24:15-67)। क्या आप उन लोगों को प्रेम दिखाएंगे जो दुःख में हैं?

फ़िरौन की बेटी

मूसा की माँ ने लड़के को नील नदी में डालने की योजना बनाई, इसलिए उसने बच्चे को एक टोकरी में छिपा दिया और नदी के पानी के ऊपर छोड़ दिया, हालाँकि फ़िरौन की बेटी ने अपनी दया के कारण बच्चे को बचा लिया। (निर्गमन 2:1-10)। क्या आप उन लोगों को बचाने के लिए तैयार हैं जिन्हें नाश किया जा रहा है?

प्रार्थना जीवन में सर्वश्रेष्ठ स्त्रियाँ

हन्ना

उसने अपनी जोशीली प्रार्थनाओं के द्वारा एक बच्चे का आशीष को प्राप्त किया। उसने अपना पुत्र परमेश्वर को समर्पित किया। (1शमूएल अध्याय 1, 2)

एस्तेर

उसने अपने उपवास व प्रार्थना के द्वारा यहूदी लोगों को विनाश से बचाया। (एस्तेर अध्याय 7, 8)

प्रार्थना विजय लाती है

हमने पिछले महीने की पत्रिका में प्रार्थना के बारे में कुछ बातों पर चर्चा की। हम आशा करते हैं कि इसने आप सभी को प्रतिदिन परमेश्वर से प्रार्थना करने में मदद की।

बाइबल में वर्णित प्रार्थनाएँ क्या हैं?

1. समर्पित प्रार्थना: हन्ना ने प्रार्थना में अपनी आत्मा यहोवा के सामने उण्डेल दी। (1शमूएल 1:11)

2. गंभीर प्रार्थना: एलिय्याह ने गंभीरता से प्रार्थना की कि बारिश न हो। (याकूब 5:17,18)

3. मनभावती प्रार्थना: सुलैमान की मनभावती प्रार्थना ने यहोवा के हृदय को प्रभावित किया। (1राजा 3:9,10)

4. आत्मा से भरी प्रार्थना: पवित्र आत्मा से बंधी हुई, भीतरी मन से आह भरी प्रार्थना।

5. बाधा डालती प्रार्थना: छुटकारे व मुक्ति के लिए एक संघर्षपूर्ण प्रार्थना।

6. चौकस प्रार्थना: जागते रहना और हमारी गली, शहर और राष्ट्र के लिए प्रार्थना करना, जैसे शहर के पहरेदार जागते रहते हैं और शहर की रक्षा करते हैं।

7. ऊँचे स्वर से प्रार्थना: शैतान के हमलों को बांधने के लिए और युद्ध के दौरान की जाने वाली प्रार्थना।

8. मध्यस्थता की प्रार्थना: मूर्ति पूजा में बंधे लोगों के दिमाग को खोलने और उन्हें परमेश्वर के प्रकोप से बचाने के लिए प्रार्थना।

9. आँसूओं के साथ प्रार्थना: विनाश से मुक्ति के लिए प्रभु के हृदय को प्रभावित करने के लिए आंसू बहाती प्रार्थना।

10. आवश्यकता की प्रार्थना: एक निःस्वार्थ प्रार्थना, हमारे देश पर अपना न्याय न भेजने के लिए परमेश्वर को पुकारना।

प्रार्थना के बाद दृश्य परिवर्तन क्या हैं?

1. चेहरे में बदलाव।

2. कभी-कभी, किसी को संघर्ष और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

3. अंत अच्छा होगा।

तो, आइए हम हर दिन व्यवस्थित तौर से और पूर्ण रूप से प्रार्थना करें कि हमारे जीवन व हमारे देश में एक बहुत बड़ा बदलाव हो और जीत हासिल हो।